## अनुसंधान प्रक्रिया / Research procedure

① **उद्देश्यों का विशिष्टीकरण** – शोध में उद्देश्य प्रारम्भ में बहुत विशिष्ट नहीं होते बल्कि व्यापक होते हैं। प्रारम्भ में जिन प्रश्नों को लेकर चला जाता है वे पूर्वकालीन अवस्थाओं के रूप में होते हैं। जब शोध आगे बढ़ता है तथा वास्तव में निरीक्षण व अवलोकन का कुछ कार्य हो जाता है और पर्याप्त शोध सामग्री उपलब्ध हो जाती है जिससे वास्तविकता का पता चलता है।

मोटे तौर से जब कुछ उद्देश्य या प्रश्न निर्धारित हो जाता है तो अनुसंधान की प्रक्रिया का निर्धारण किया जाता है अर्थात यह निश्चय किया जाता है कि शोध सामग्री किस प्रकार की होगी उसके स्रोत क्या होंगे किस प्रकार उसे एकत्रित किया जायेगा तथा किस प्रकार उसका विश्लेषण किया जायेगा इस प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य आते हैं :-

i **शोध सामग्री : इन शोध की सामग्री गुणात्मक व मात्रात्मक होती है।** जिसे विस्तार पूर्वक लिखा जाता है। इसके बहुत से रूप व प्रकार होते हैं। जैसे शब्द, बातचीत, प्रलेख, लिखित, दस्तावेज, व्यवहार, रहनसहन के ढंग, रीतिरिवाज, गीत, ग्राम्य फोटोग्राफ आदि। कोई भी वस्तु जो समस्या पर प्रकाश डालती है।

2. **सामग्री का एकत्रीकरण :**- सामग्री का एकत्रीकरण उसी स्थानपर जाकर प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा किया जाता है। नैसर्गिक परिवेश में निरीक्षण करना इन अध्ययनों की आधारभूत प्रक्रिया है। किसी संस्था या समूह का अध्ययन करना है वह जहाँ है वहीं जाकर निरीक्षण व अवलोकन किया जाता है। शोधकर्ता उस समूह में जाकर वहाँ की स्वाभाविक रूप से इसके सदस्यों के

**शोध समस्या के चयन से सम्बन्धित कुछ व्यवहारिक तथ्य** :- शोध कर्ता को किसी समस्या का चयन करते समय अपनी रुचि का ध्यान रखना चाहिये समस्या के चयन में जब तक उसकी रुचि नही होगी वह समस्या का गहन अध्ययन नही कर पायेगा।

② - शोध कर्ता की क्षमता - शोधकर्ता को अनुसंधान का चयन करते समय अपनी क्षमता का भी ध्यान रखना चाहिये उसमें समस्या का अध्ययन की क्षमता होनी चाहिये।

③ व्यय शोधकर्ता को शोध समस्या का चयन करते समय यह विचार कर लेना चाहिये कि इस पर कितना व्यय होगा तो क्या वह स्वयं वहन कर लेगा उस समस्या पर भी विचार करना चाहिये। कुछ शोध प्रबन्ध में तो अधिक खर्च लगता है और कुछ में कम।

④ शोध समय नैतिक मूल्य के विपरीत नही चाहिये।

⑤ - नवीनता - शोध कर्ता को ऐसी समस्या चयन करना चाहिये जिसमें अधिक से अधिक नवीनता का गुण होना चाहिये जो अधिक सार्थक व नवीनतम अध्ययन कर एक स्पष्ट शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर सके।